## समस्या के समाधान के लिये अनेकान्त का प्रयोग आव  यक : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़ : 13 जनवरी 2011

राश्ट्रसंत आचार्य महाश्रमण ने कहा कि अनेकान्त चेतना का जागरण आव  यक है। इससे जीवन का मार्ग सुगम हो जाता है। सत्य–अहिंसा को सभी समस्याओं के निराकरण का महत्वपूर्ण सूत्र बताया।

तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधि ाास्ता आचार्य महाश्रमण गुरूवार को प्रातः गोल्छा ज्ञान मंदिर में बताया कि जो वीर पुरुश होते है वो अहिंसा, सत्य व संयम के पथ पर चलते है। सत्य पथ पर चलने में परे ाानी तो आ सकती है पर परास्त नहीं होता। अहिंसा एक धर्म है सत्य–संयम उसके अंग है। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा व नैतिकता का जागरण किया और भारतीय संस्कृति को व्यापक बनाने हेतु मानवीय चेतना को जगाने का प्रयास किया। गुरुदेव तुलसी ने भी नैतिकता का पाठ पढ़ाया। नैतिकता आचरण में हो तो ईमानदारी भी धर्म बन जाता है। चाणक्य का उदाहरण देते हुए कहा कि चाणक्य दो प्रकार के दीपक जलाया करता था, एक तो निजी कार्य हेतु स्वयं का एवं दूसरा राजकीय कार्य हेतु राज्य का दीपक। इस तरह की भावना से कार्य करने का आम जनता यदि अनुसरण करे तो हिन्दुस्तान के चरित्र का नक ाा बदल सकता है व दे ा उन्नति के ि ाखर को छू सकता है। हम अपने आपको सच्चे अर्थों में सही रखने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि मनुश्य अपने दृश्टिकोण को उदार बनावें, दुराग्रह का त्याग करे व तत्व को समझने के लिए अनेकान्त का प्रयोग करे। इससे परिवार में भी अच्छा वातावरण बन सकता है। हम अपने प्रतिदिन के व्यवहार में अनाग्रह का उपयोग करें व आग्रह का त्याग करें। परिवार में व्यर्थ की खींचतान नहीं कर उदारता के साथ समाधान खोजने का प्रयत्न करें। हमारे मन में भाासन करने का भाव नहीं आना चाहिए अपितु हमारे भाव सम्यक् हों। परिवार, समाज व राश्ट्र के विकास में संयम की अहम भूमिका है। आचार्य महाश्रमण ने सज्जन पुरूश को पंखे की संज्ञा देते हुए कहा कि सज्जन पुरूश स्वयं दुख उठाकर दूसरों को सुख पहुंचाते है। उन्होंने कहा कि अहिंसा केवल चर्चा का विशय नहीं है, इसे अपने आचरण में उतारना चाहिए और कहा कि हमें चलने से पहले ही अपना रास्ता सुनि ि चत कर लेना चाहिए। तभी हम आसानी से अपनी मंजिल पर पहुंच पायेंगें। महान बनने के लिए हर व्यक्ति के पास सम्यक् ज्ञान व अच्छा मनोबल होना जरुरी है।

इसके प  चात साध्वीश्री राजीमती जी ने निवेदन के साथ कि 5 तारीख से 13 तारीख हो गई, आज 8 दिन बाद हमें अपने जन्म–स्थल में पधारने वाले सिंघाड़ों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करना चाहिए। इस पर आज 8 दिन बाद यहां (रतनगढ़) से दीक्षित सतियों ने स्वागत गीतिका से अपने आराध्य का स्वागत किया।

प्रवचन पूर्व साध्वी सरसप्रभा, साध्वी रतनश्री, साध्वी सुब्रताश्री व साध्वी समताश्री ने भी गुरूवर के चरणों में मंगल श्रद्धा–सुमन कर आध्यात्मिक विचार रखे।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+91 9831017467
rs_dugar@yahoo.com